

नख-शिख, बारहमासा आदि का सोदाहरण विवेचन काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर किया गया हो उदा. रसराज और भाषाभूषण उत्तम रीतिकाव्य हैं (मतिराम)।

रीतिबद्ध पुं. (तत्.) 1. काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर अर्थात् लक्षणों के अनुरूप उदाहरण प्रस्तुत करते हुए जिन काव्यों की रचना की गई है वे रीतिबद्ध काव्य हैं, इसमें भी दो प्रकार की काव्य रचनाएँ हैं- लक्षणबद्ध और लक्ष्यमात्र, लक्षणबद्ध कवि जैसे- चिंतामणि, मतिराम, देव, भिखारीदास, पद्माकर आदि, लक्ष्यमात्र काव्य ग्रंथों के कवि बिहारी, रसनिधि आदि प्रसिद्ध हैं, इनके ग्रंथ बिहारी सतसई, विक्रम सतसई, राम सतसई आदि प्रसिद्ध हैं उन्हें ही रीति सिद्ध माना गया है, लक्षणबद्ध उदा. शिवराज भूषण (भूषण) 2. वे ग्रंथ जो आचार्य कवियों द्वारा सिद्धांतों के प्रतिपादन अथवा विवेचन हेतु रचे गए थे।

रीतिमुक्त पुं. (तत्.) वे काव्य हैं जिनकी रचना, उत्तर मध्यकाल में काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों लक्षणों से मुक्त होकर की गई है, इस प्रकार की काव्यरचना का मूलधार नीजी जीवनानुभव और वैयक्तिक अनुभूतियाँ रही हैं, इस धारा में तीन प्रकार की रचनाएँ हुई 1. स्वच्छंद, शृंगारिक काव्य धारा 2. वीर काव्य धारा 3. नीति-वैराग्य-भक्ति काव्य धारा, इस धारा के प्रथम वर्ग के प्रसिद्धकवि हैं- आलम, घनानंद, बोधा, ठाकुर, द्विजदेव, आदि, वीर काव्य धारा के प्रसिद्ध कवि- गोरेलाल, सूदन, जोधराज, चंद्रशेखर वाजपेयी आदि हैं, इसकी नीति- वैराग्य- भक्ति शाखा के कवियों में से वृन्द, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि आदि प्रमुख हैं।

रीतिसिद्ध पुं. (तत्.) वे काव्य रचनाएँ हैं जो काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुरूप स्वतंत्र रूप से लिखी गई हैं किंतु इनमें सिद्धांतों का किसी भी रूप में उल्लेख या उनकी चर्चा नहीं की गई है।

रीम स्त्री. (अं.) 1. 20 दस्ते कागज की एक गड़ड़ी 2. पीब, मवाद 3. तलछट।

रील स्त्री. (अं.) 1. चरखी, फिरकी 2. किसी कार्यक्रम से संबंधित फोटो, फिल्म आदि की चरखी 3. लड़खड़ाहट 4. चकराना क्रि.स. चरखी पर लपेटना, चरखी से उतारना।

रुंड पुं. (तत्.) 1. सिर कट जाने के बाद बचा हुआ शरीर 2. वह शरीर जिसके हाथ-पैर कट गए हों 3. कबंध।

रुंधना क्रि.अ. (तद्.) 1. किसी अन्य चीज के पड़ने पर मार्ग का रुंध जाना, मार्ग रुकना या घिरना 2. झाड़ियों आदि में चलते हुए उलझना 3. किसी स्थान को सुरक्षा की दृष्टि से कँटीली झाड़ियाँ या कँटीले तार लगाकर बंद करना 4. लाक्ष. किसी कार्य में ऐसा फँस जाना जिससे अन्य कार्य करना संभव न हो सके।

रुआ पुं. (तद्.) 1. शरीर की त्वचा पर स्थित रोआँ, लोम 2. सेमर के फूल का रुआ।

रुआब/रोआब पुं. (फा.) वह आचरण, व्यवहार या शक्ति जिससे दूसरे को प्रभावित या आतंकित किया जा सके 2. दाब 3. प्रताप, तेज 4. इकबाल 5. आतंक, डर 6. धाक, दबदबा मुहा. रोब (रुआब) दिखाना- धाक जमाना।

रुई स्त्री. (देश.) 1. कपास वृक्ष का सफेद फूल जिससे बीज निकालकर सूत बनाया जाता है 2. कपास के फूल धुनने के पश्चात् की स्थिति- रुई 3. पहाड़ में होने वाला एक छोटे आकार का वह वृक्ष जिसकी छाल एवं पत्तियाँ रँगई के काम आती हैं।

रुकना अ.क्रि. (तद्.) 1. कुछ क्षणों या समय के लिए ठहर जाना 2. गतिरोध होना 3. होते हुए कार्य का बंद हो जाना 3. क्रम में अवरोध उत्पन्न होना।

रुकवाना सं.क्रि. (तद्.) 1. किसी होते हुए कार्य को किसी के द्वारा रोकने का कार्य करवाना 2. किसी अनपेक्षित कार्य को अधिकारी के आदेश आदि द्वारा न होने देना 3. किसी के होने वाले कार्य में बाधा डलवाना।

रुकाव पुं. (तद्.) 1. रुकने की क्रिया या भाव, रोक 2. बाधा, विघ्न 3. ठहराव।